ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.21, No2, April – June, 2026/148

प्राचीन भारत की जैन गुफाएं

डी0 पी0 तिवारी एवं अनुष्का ओझा

https://doi.org/ 10.61410/had.v21i2.287

जैन धर्म एक निरन्तर प्रवर्धमान धार्मिक मत है। समय के साथ इसका स्वरूप, मान्यताएं, धार्मिक विश्वास और कर्मकाण्ड अपने में नवीन तत्वों को समाहित करते रहे हैं जिसका प्रमाण कला में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। प्रारम्भ में जैन सम्प्रदाय में देवता और उनकी पूजा का चिंतन अन्य संप्रदायों से थोड़ा भिन्न था। जैन ईश्वर का तात्पर्य एक मुक्त आत्मा मानते थे। उनके यहां तीर्थंकर जिन्होंने धर्म की देशनाएं दीं और संघ की स्थापना की एक पूर्ण मुक्त आत्मा या सिद्ध माने गए। वे इस संसार रूपी सागर को पार करने का रास्ता बताने वाले पथ प्रदर्शक थे। उनका अनुकरण कर प्रत्येक अनुयायी स्वयं का उत्कर्ष करता था। जैन संप्रदाय में कोई प्रार्थना या स्तुति से किसी ईश्वर को प्रसन्न करके उससे वर प्राप्त कर न तो भौतिक लाभ की इच्छा करता था न ही स्वर्ग या मोक्ष की कामना। वह अपने तीर्थंकरों से शिक्षा ग्रहण कर, उनके बताए मार्ग पर चल कर स्वयं उनकी ही भांति मुक्त होने का प्रयास करता था। इसलिए जैन संप्रदाय में पूजा का विधान तो था किन्तु उसकी प्रकृति अन्य संप्रदायों की भक्ति और पूजा परम्परा से पूर्णतया भिन्न थी[1]। जैन भाव पूजा में विश्वास करते थे न कि द्रव्य पूजा और मूर्ति पूजा में। यहां तीर्थंकर या अर्हत की पूजा देवता से भिन्न एक पूर्ण मानव के रूप में होती थी जिन्होंने लोभ, मोह, राग, द्वेश इत्यादि सभी बन्धनों को तोड़ कर आसक्ति, अनासक्ति से ऊपर उठ कर एक निर्मुक्ति की अवस्था प्राप्त की थी और शेष को उस अवस्था को प्राप्त कराने का प्रयास करते थे। इसीलिए उनकी मूर्तियां ध्यान या कायोत्सर्ग मुद्रा में योगी के रूप में बनाई जाती थी[2]। महावीर स्वामी ऐतिहासिक काल के तीर्थंकर हैं किन्तु उन्होंने किसी मंदिर में जाकर किसी जिन की उपासना की हो ऐसा उल्लेख नहीं मिलता। हां उनकी स्वयं की उनके जीवनकाल में चन्दन की मूर्ति बनाए जाने का उल्लेख मिलता है जिसे जीवन्तस्वामी कहा गया है। इस प्रकार की मूर्तियां 6ठी शताब्दी से मिलने भी लगती हैं[3]। धीरे–धीरे जैन सम्प्रदाय ने भी मंदिरों के निर्माण, उसमें जिन मूर्तियों की स्थापना, उनकी पूजा को अंगीकार किया तथा यक्ष यक्षिणियों आदि की पूजा के माध्यम से भौतिक उत्कर्ष, संतानादि की प्राप्ति की कामना प्रारम्भ हुई। प्रत्येक तीर्थंकर का अपना लांछन निश्चित हुआ। सबसे प्राचीन ज्ञात मूर्ति लोहानीपुर, पटना से प्राप्त है, जो मौर्य काल की मानी जाती हैं[4]।

जैन धर्म में पंच परमेष्टियों, तीर्थंकरों, आचार्यों, उपाध्यायों और साधुओं की आदर पूर्वक पूजा की जाती है। इनमें पूजा से प्रारम्भिक दो पूर्ण सिद्ध और अंतिम तीन गुरू की श्रेणी में आते हैं। भक्ति आन्दोलन के प्रभाव के साथ आज जैन मंदिरों में तीर्थंकरों एवं सिद्धों के साथ–साथ क्षेत्रपाल, दिक्पाल, सरस्वती, हरिनैगमेशी, यक्ष–यक्षी, और नागों की पूजा होने लगी है[5]। उनकी स्तुति, भोग, जलाभिषेक, माल्यार्पण, पुष्पार्चन, चरण स्पर्श, प्रदक्षिणा, की जाने लगी है। कुछ जैन संप्रदाय जैसे श्वेताम्बर स्थानकवासी और दिगम्बर तारनपन्थी मूर्ति पूजा को विशेष महत्व नहीं देते हैं। वे न तो मंदिर निर्माण के पक्षधर हैं न ही उनमें मूर्ति स्थापना के। जैन संप्रदाय में जिनों के पंच कल्याणक की प्रतिष्ठा है।

- **प्रोफेसर (अवकाश प्राप्त), प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ**
- **सहायक आचार्य, राजकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बयाना, भरतपुर, ,राजस्थान**

प्रत्येक तीर्थंकर के गर्भ–धारण, जन्म, निष्क्रमण, कैवल्य, और निर्वाण को सभी जैन धर्मानुयायी बड़ी श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाते हैं[6]।

गुफाः

पहाड़ों के बीच नैसर्गिक रूप से बनी कन्दराओं एवं गुफाओं को आदि मानव ने शीत से बचने के लिए प्रागैतिहासिक काल से अपना आश्रय बनाया था। इसके प्रमाण विश्व के प्रत्येक भाग से मिलते हैं। कालान्तर में उच्च पूर्व पाषाण काल से उन्हें सजाने संवारने की प्रक्रिया शैलचित्रों के माध्यम से प्रारम्भ हुई। मध्य पाषाण काल में नूतन काल के आगमन और जलवायु के ऊष्ण होने के साथ–साथ आदिमानव मैदान की ओर अग्रसर होकर भवन निर्माण कर रहने लगा किन्तु ऋग्वैदिक काल से मानव जीवन दर्शन में तप और संन्यास की अवधारणा का समावेश हुआ और वानप्रस्थियों, तपस्वियों एवं संन्यासियों ने पुनः इन गुफाओं को अपना आश्रय बनाया। भारत का प्रत्येक धर्म या संप्रदाय सनातन से उद्भूत या संबद्ध होने के कारण तप और संन्यास को स्वीकार करता चला आया है, परिणामतः प्रत्येक धर्म एवं संप्रदाय के तपस्वियों एवं संन्यासियों ने गृहस्थ अवस्था के परित्याग के बाद इन गुफाओं में रह कर तप और साधना करने लगे। इसी कारण ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन भिक्षुओं ने इन गुफाओं का सेवन किया। प्रारम्भ में निर्जन वनस्थली की प्राकृतिक गुफाओं का उपयोग किया गया किन्तु भिक्षुओं की संख्या में वृद्धि होने के कारण कृत्रिम गुफाओं का निर्माण किया जाने लगा। इस निर्माण को प्रश्रय धर्म सहिष्णु राजाओं, संपन्न भक्तों एवं व्यापारियों ने दिया। अनेक गुफाओं में इन दानदाताओं के नामों का उल्लेख आज भी इन गुफाओं में टंकित अभिलेखों से मिलता है। सभी गुफाओं का स्वरूप, उनकी बनावट चाहे वे प्राकृतिक हों या मानव निर्मित लगभग एक सा है। अन्तर या भेद उनमें स्थापित मूर्तियों, चित्रों या प्रतीकों के माध्यम से किया जाता है। इस प्रकार जैन गुफा वह गुफा है जिसमें जैन तीर्थंकरों, जिनों, या जैन धर्म से संबन्धित प्रतीकों या आख्यानों का उत्कीर्णन या किसी अन्य प्रकार का अंकन हो। जब किसी पहाड़ी पर अनेक गुफाएं बनाई जाती हैं तो कुछ भिक्षओं के कुछ आवास सादे, अनलंकृत और मूर्ति विहीन भी बन जाते हैं, उन्हें भी बहुलता के बीच बनी तत्प्रकार की गुफाओं के आधार पर उसी संप्रदाय से संबद्ध मान लिया जाता है।

प्रारम्भ में जैन भिक्षु प्राकृतिक गुफाओं में रहते थे जो नितांत सादी और मूर्ति विहीन थीं । वे इन गुफाओं का प्रयोग आवास की तरह करते थे। कालान्तर में इनका गुफा मंदिर के रूप में उपयोग होने लगा और इन गुफाओं की दीवारों पर जैन तीर्थंकरों, उनके यक्ष यक्षिणियों की मूर्तियां उकेरी जाने लगीं। कुछ गुफाओं में ताखों में मूर्तियां और पूजा के उद्येश्य से चरण पादुकाएं स्थापित की जाने लगीं। गुफाओं को सजाने के क्रम में प्रवेश द्वार पर लकड़ी का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। कुछ प्राकृतिक गुफाओं का सातवीं शताब्दी के बाद पीछे की तरफ विस्तार किया गया। यहां गर्भगृह का निर्माण कर उसमें तीर्थकर की मूर्ति स्थापित की गई। गुफा मंदिरों को भव्य बनाने के उद्येश्य से इनके बाहर लकड़ी का मंडप बनाया जाने लगा, जो समय के साथ नष्ट हो गए किन्तु पहाड़ियों में अब भी उनके स्तम्भगर्त देखने को मिलते हैं। सित्तनवसल और एलोरा की गुफाओं में छतों पर रंगों से चित्र बनाकर उनको सजाने के प्रमाण मिलते हैं। पुरानी गुफाओं को अलंकृत करने के उद्येश्य से गुफाओं के बाहर भी पत्थरों पर जिन मूर्तियां एवं अन्य धार्मिक अभिप्राय बनाना एक सामान्य परम्परा बन गई। 16वीं शताब्दी के बाद की कुछ पुरानी गुफाओं में सिरेमिक टाइल लगाकर उनको भव्य बनाने का प्रयत्न किये जाने के उदाहरण भी मिलते हैं। इस तरह का प्रयोग महाराष्ट्र की मांगी–तुंगी गुफा में देखा जा सकता है।

मानव निर्मित गुफाओं की प्राचीनता तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व तक ले जाई जा सकती है। इस श्रेणी में सर्वाधिक प्राचीन गुफाओं में बिहार में स्थित बराबर की गुफाओं का नाम लिया जा सकता है जो बौद्ध संन्यासियों के निवास के उद्येश्य से बनाई गई थीं। इन सात गुफाओं में सुदामा गुफा सबसे प्राचीन मानी जाती है जिसमें अंकित अभिलेख से ज्ञात होता है कि इसका निर्माण अशोक के शासनकाल के 12वें वर्ष 252 ईसा पूर्व में किया गया था[7]। इन्हीं के अनुकरण पर समय–समय पर भारत के प्रत्येक भाग में जैन भिक्षुओं के लिए भी गुफाएं निर्मित की गईं जिनमें से प्रमुख गुफाओं का विवरण निम्नवत हैः

ग्वालियरः

ग्वालियर, तोमर काल की विशाल जैन मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है। ग्वालियर किले में जैन कला और धर्म से संबन्धित गतिविधियां यशोवर्मा (725–752ई0) के पुत्र आम[8] के समय से प्रारम्भ हुईं। उसने बप्पभट्टसूरि से प्रभावित होकर महावीर की एक विशाल प्रतिमा का निर्माण करवाया। प्रबन्धकोश के अनुसार उसने ग्वालियर में एक जैन मंदिर का निर्माण करवाया। ग्वालियर में तोमर शासक विक्रमदेव और वीरसिंहदेव (1375–1400 ई0) से लेकर कीर्तिसिंह (1403–1480 ई0) के काल में ग्वालियर दुर्ग में अनेक गुफाओं एवं मूर्तियों का निर्माण हुआ। दुंगेन्द्र सिंह, कीर्तिसिंह और वीरमदेव जैन धर्म, कला और स्थापत्य के प्रबल उन्नायक थे और उनके सहयोग से अनेक गुफाओं का निर्माण हुआ।

सिद्धाचल गुहा मंदिरः

ग्वालियर किले के उर्वाही फाटक के सम्मुख वाली पहाड़ी की गुफाएं 14वीं और 15वीं शताब्दी में तोमर शासकों के काल में उकेरी गई 24 तीर्थंकरों की विशालकाय मूर्तियों से संवलित हैं[9]। उर्वाही समूह में कुल 22 मूर्तियां हैं जिनमें 6 पर अभिलेख हैं। पूरे क्षेत्र में 5 समूहों में पद्मासन और कायोत्सर्ग मुद्रा में नग्न स्वरूप में मूर्तियां बनी हैं। किले के अन्दर उर्वाही सड़क के दोनों किनारों पर बनी इन विशाल मूर्तियों में 58 फीट ऊँची वृषभ लांछन युक्त पीठ पर खड़ी ऋषभनाथ, 30 फीट ऊंची शंख लांछन युक्त पीठ पर विराजमान नेमिनाथ, सर्पछत्रावली के नीचे पार्श्वनाथ और सिंह लाछन से युक्त पीठ पर महावीर की मूर्तियां उल्लेखनीय हैं[10]। इन विशाल मूर्तियों के अतिरिक्त यहां अनेक छोटी मूर्तियां भी उकेरी गई हैं। 16वीं शताब्दी में बाबर के आदेश पर इन मूर्तियों को क्षत–विक्षत कर दिया गया था जिनमें से कुछ का जीर्णोद्धार सिंधिया शासकों और जैन सम्प्रदाय के लोगों के सहयोग से किया गया है (चित्रः1)।

चित्रः 1 सिद्धाचल की ऋषभनाथ मूर्ति

अम्बापुरम (नेदुम्बी बसती)ः

आन्ध्र प्रदेश के विजयवाड़ा के समीप अम्बापुरम गांव में अम्बापुरम और अदवीनेक्कलम पहाड़ियों को काट कर यह शैलकृत गुफा सातवीं–आठवीं शताब्दी के वेंगी के चालुक्यों के राज्य काल में बनाई गई थी। इसमें अम्बिका की प्रतिमा उल्लेखनीय है। इस गुफा में सादी दीवारों से बना बरामदा, यक्ष और पांच फनों वाले छत्र के नीचे स्थित पार्श्वनाथ एवं अम्बिका की प्रतिमा से युक्त अन्तराल और

महावीर की प्रतिमा के साथ गर्भगृह बने हैं। गर्भगृह की दीवारों पर 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाएं उकेरी गई हैं।

बादामी की गुफाएंः

कर्नाटक के उत्तरी भाग में बागलकोट जनपद में स्थित 6ठी शताब्दी में निर्मित गुफाएं जैन, बौद्ध और ब्राह्मण संप्रदायों से संबन्धित हैं। इनका निर्माण चालुक्यों के समय में किया गया था। यहां की गुफा क्रमांक 4 जैन संप्रदाय से संबन्धित है (चित्रः 2.)।

चित्रः 2.अगस्त्य झील के किनारे जैन गुफा

बादामी की जैन गुफा क्रमांक 4 जो आकार में छोटी है, गुफा क्रमांक 3 के पूरब में 10 फीट की ढाल पर बलुआ पत्थर की चट्टानों को काटकर उसमें स्तम्भों एवं ब्रैकेट के युक्त मुख मंडप, स्तम्भों पर टिके महामंडप, और छोटे आकार के गर्भगृह के साथ नागर और द्राविड़ मिश्रित शैली में बनाया गया है। इस गुफा का बरामदा 31 फीट लम्बा, 6.5 फीट चौड़ा है तथा गुफा की गहराई 16 फीट है। इसका निर्माण आठवीं से 11वीं शताब्दी के बीच किया गया था। इस गुफा मंदिर में बाहुबली, पार्श्वनाथ और महावीर की प्रतिमा के साथ अन्य तीर्थंकरों को भी बनाया गया है। बाहुबली की ध्यान मुद्रा में कायोत्सर्ग प्रतिमा विलक्षण है। उनके पैरों के पास बेल अलंकरण है। पार्श्वनाथ को पांच सर्पफन छत्र के साथ और महावीर को सिंह लांछन से युक्त आसन पर बैठी मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। यहां पर उत्कीर्णित अन्य आकृतियों में चौरी, मकर, यक्ष–यक्षी, पद्मावती, इन्द्रभूति गौतम, और स्तम्भों पर अन्य जैन तीर्थंकरों की मूर्तियां मुख्य है[11]।

बादामी की गुफा से कुछ बड़ी एक गुफा ऐहोल में है। इसका बरामदा 32 फीट लम्बा, 7.25 फीट चौड़ा है जो चार सादे स्तम्भों पर टिका है। इसकी छत पर मकर और फूल पत्तियों का उत्कीर्णन है। इससे संलग्न दोनों पार्श्व दीवारों पर पार्श्वनाथ एवं प्रतीहारी सहित जिन मूर्तियां बनी हैं। बरामदे से गुफा के कक्ष में प्रवेश करने के लिए एक आठ फीट चौड़ा दरवाजा है जिसके बीच में एक स्तम्भ है। इस दरवाजे से संलग्न एक कक्ष है जिसके पीछे की दीवारों पर द्वारपाल बने हैं तथा उसके पीछे जिन प्रतिमा बनी है।

धारशिव की गुफाएंः

महाराष्ट्र की बालाघाट की पहाड़ियों में उस्मानाबाद से 8 किलोमीटर की दूरी पर धारशिव गांव में 8 श्रमण गुफाएं हैं। इनका निर्माण पांचवीं से सातवीं शताब्दी के बीच किया गया था। इनमें खड्गासन और कायोत्सर्ग मुद्रा में दिगम्बर तीर्थंकरों की प्रतिमाएं स्थापित है। महाराष्ट्र की गुफाओं का अध्ययन करने वाले जेम्स वर्गेस के अनुसार धारशिव की गुफाएं[12] मूलतः छठी शताब्दी में निर्मित बौद्ध संप्रदाय से संबन्धित थीं। यहां राष्ट्रकूट शासकों द्वारा जैन भिक्षुओं के रहने के लिए 10वीं शताब्दी में कतिपय जैन गुफाओं का निर्माण करवाया गया था।

त्रिरश्मि गुफा नासिकः

यह गुफा महाराष्ट्र में नासिक से 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां कुल 24 गुफाएं एवं एक चैत्य है। यहां की अधिकांश गुफाएं महायान बौद्ध धर्म से संबंधित हैं जिसमें गुफा क्रमांक 11 ऋषभदेव को समर्पित जैन गुफा है। यह गुफा अन्दर से 11 फीट 7 इंच लम्बी एवं 7 फीट 10 इंच चौड़ी है। इसकी दीवारों पर सिंहासन पर बैठे प्रतीहारी, यक्ष मणिभद्र, हाथी पर सवार इन्द्र, और अम्बिका की प्रतिमा स्थापित हैं।

चित्रः 3, त्रिरश्मि गुफा, नासिक

आभिलेखिक साक्ष्यों के आधार पर इन गुफाओं के निर्माण का श्रेय प्रथम शताब्दी में स्थानीय व्यापारियों को दिया जाता है। इस गुफा से एक अभिलेख प्राप्त है जिसमें एक लेखक शिवमित्र के पुत्र रामनक के दान का वर्णन है[13] (चित्रः 3)।

कुपलंथम पाइगई मलाई जैन गुफा मंदिरः

यह गुफा तमिलनाडु में मदुरई के कुप्पलनाथम में पोइगई मलाई पर्वत पर कुप्पलनाथम गांव में गोंडा नाथी नदी के किनारे एक व्यापारिक मार्ग पर स्थित है[14]। यह मदुरई के आठ प्रमुख जैन केन्द्रों में एक है। इस गुफा का निर्माण 9वीं शताब्दी में किया गया था। ऐसा विश्वास है कि यहां पांच तीर्थंकरों ने शुद्धि प्राप्त की थी। यहां से घसीट लिखावट वाला एक घिसा अभिलेख भी प्राप्त है। प्रत्येक चैत्र मास की पूर्णिमा को यहां मेले का आयोजन होता है (चित्रः 4–5)।

चित्रः 4, कुपलंथम पाइगई मलाई गुफा

चित्रः 5, तीर्थंकर मूर्तियां, कुपलंथम पाइगई मलाई गुफा

सोन भण्डार गुफाः

यह गुफा बिहार के राजगृह जनपद में बैभार की पहाड़ी को काट कर बनाई गई थी। इस गुफा का निर्माण काल तीसरी–चौथी शताब्दी माना जाता है जबकि कतिपय विद्वान इसके प्रवेशद्वार की बनावट, पालिश आदि के आधार पर इसे बराबर की गुफाओं का समकालीन मौर्यकालीन मानते हैं[15]। यहां प्राप्त गुप्त कालीन ब्राह्मी में लिखित लेख से ज्ञात होता है कि मुनि वैरादेव जो एक आचार्य शिरोमणि थे, ने दो गुफाओं का निर्माण करवा कर उनमें तीर्थंकरों की मूर्तियां स्थापित की थीं।

राजगृह, महाभारत काल से 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व तक मगध की राजधानी रहा है जो चारो तरफ से विपुल, वैभार, रत्न, उदय, और स्वर्ण नामक पहाड़ियों से घिरा है। यहां 20वें तीर्थंकर मुनिसुव्रत का जन्म हुआ था, 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने इस स्थान का भ्रमण किया था तथा महावीर ने यहां 11 वर्षावास किए थे। इन सभी पहाड़ियों के ऊपर जैन मंदिर बने थे। वैभार पहाड़ी के ऊपर एक प्राचीन परिसर जिसके बीच में पूर्वाभिमुख मंदिर है उसके चारो ओर खुला आंगन और उसके किनारे कोठरियां बनी हैं। इन कोठरियों के ताखों में जैन तीर्थंकरों ऋषभनाथ, नेमिनाथ, चन्द्रप्रभ, पार्श्वनाथ, संभवनाथ, सुपार्श्वनाथ, और यक्षी अंबिका की मूर्तियां स्थापित हैं। ये मूर्तियां गुप्तकाल से लेकर 10वीं–11वीं शताब्दी तक की हैं (चित्रः 6–8.)।

चित्रः 6, सोनभंडार गुफा

चित्रः 7, दूसरी गुफा में जैन मूर्तियां

चित्रः 8,जैन मूर्तियां,

चित्रः9, वल्लीमलाई गुफा

वल्लीमलाई गुफाः

यह एक 40 फीट लम्बी, 20 फीट गहरी एवं 7–10 फीट ऊंची प्राकृतिक गुफा है जिसमें तीन कक्ष हैं। बिहार से उत्तर मौर्यकाल में यहां आने वाले दिगम्बर जैन संन्यासियों ने अपना आवास बनाया था। इसकी समतल चमकदार फर्श का निर्माण सातवाहन काल मे किया गया[16]। आठवीं–नवीं शताब्दी में वल्लीमलाई जैन धर्म का एक सुप्रतिष्ठित केन्द्र बन गया और गंग राजा रचमल्ल द्वितीय ने 870 ई0 में चोलों के इस क्षेत्र पर विजय के पश्चात इस गुफा में कतिपय जैन मूर्तियों का प्रतिष्ठापन किया। इस गुफा से कुल पांच अभिलेख प्राप्त हैं जिसमें एक अभिलेख में बान साम्राज्य के देवसेन और जैन भिक्षु भवनन्दिन तथा आर्यनन्दिन के नाम का उल्लेख मिलता है। इस गुफा की दो कोठरियों में तीर्थंकरों की मूर्तियां हैं। इसी गुफा में सुखासन में बैठी कण्ठहार, भुजबन्ध एवं मुकुट धारण किए हुए अम्बिका और अपने बांए हाथ में अंकुश तथा दांए हाथ में फंदा लिए हुए चारभुजी पद्मावती की प्रतिमा है (चित्र 9)।

उन्दावल्ली गुफा, विजयवाड़ा, आन्ध्रप्रदेशः

यह गुफा आन्ध्र प्रदेश के गुण्टूर जिले में स्थित है। इन गुफाओं का निर्माण विष्णुकुण्डिन युग में राजाओं के सहयोग से चौथी पांचवीं शताब्दी में हुआ था। इसमें अंतिम ऊपरी गुफा में 5 मीटर लम्बी एक लेटी मुद्रा की मूर्ति की पहचान कुछ लोगों द्वारा शेषशायी विष्णु तो कुछ के द्वारा पार्श्वनाथ के रूप में की जाती है (चित्रः 10)।

चित्रः 10, उन्दावल्ली गुफा

सित्तनवसल गुफाः (ऐवार कोइल):

यह गुफा तमिलनाडु के पुडुकोट्टई जिले के सित्तनवसल गांव में स्थित है। जैन संन्यासियों के निवास हेतु बनाई गई इस गुफा का निर्माण सातवीं शताब्दी में पल्लव नरेश महेन्द्र वर्मन के राजत्व काल में हुआ था। इसका जीर्णोद्धार पाण्ड्य शासक अरिकेसरी मारवर्मन (670–700 ई0) के काल में हुआ। इस गुफा की दीवारों पर लगे पतले प्लास्टर के ऊपर काले, हरे, पीले, नीले, गुलाबी रंगों के माध्यम से चित्र बनाए गए हैं। इनकी दीवारों पर जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएं उकेरी गई हैं। मंदिर के अर्धमंडप के उत्तरी और दक्षिणी पार्श्व की दीवारों के ताखों में 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ, और एक जैन आचार्य की मूर्ति उकेरी गई है। पार्श्वनाथ की मूर्ति के नीचे उलोकदितन (संसार का स्वामी) और आचार्य की मूर्ति के नीचे तिरुवसिरियन (महान आचार्य) लेख है[17] (चित्रः 11–13)।

चित्रः11, सित्तनवसल गुफा मंदिर चित्रः12, दीवारों पर तीर्थंकर मूर्तियां, चित्रः13, छत पर बने चित्र, सित्तनवसल गुफा

धंक की गुफाएंः

यह गुफा गुजरात के राजकोट जनपद में उपलेता के पास जूनागढ़ से उत्तर पश्चिम में 48 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं जिन्हें तीसरी शताब्दी ई0 में क्षत्रपों के काल में निर्मित किया गया था। इसे धंकगिरि के नाम से भी जाना जाता है। यहां दोनों ही प्रकार की गुफाएं हैं जैन और बौद्ध। जैन गुफाओं में ध्यान एवं कायोत्सर्ग मुद्रा में चौरी धारकों के साथ आदिनाथ, मृग लांछन के साथ शान्तिनाथ और सर्पफण छत्र के साथ पार्श्वनाथ की मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। इन्हें काठियावाड़ क्षेत्र की

चित्रः 14, धंक की गुफा चित्रः 15, रानी गुम्फा चित्रः 16, रानी गुम्फा, भूतल

सर्वाधिक प्राचीन जैन मूर्ति माना जाता है[18]। यहां गोंद में एक हाथ में शिशु तथा दूसरे में आम का बौर लिए यक्षी अंबिका उत्कीर्ण है [19]। ये गुफाएं पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, गुजरात के राजकोट मंडल द्वारा संरक्षित हैं (चित्रः 14)।

उदयगिरि एवं खण्डगिरि (उड़ीसा) की गुफाएंः

उड़ीसा में भुवनेश्वर से 3 किलोमीटर दक्षिण में उदयगिरि एवं खण्डगिरि नामक दो पहाड़ियों, जिन्हें कुमारी पर्वत के नाम से भी जाना जाता है, पर कुछ प्राकृतिक और कुछ मानव निर्मित गुफाएं हैं[20] जिनका निर्माण प्रथम से द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व के बीच खारवेल के शासन काल में जैन भिक्षुओं के

रहने के लिए किया गया था[21]। खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख में इन्हें लेण कहा गया है। उदयगिरि की पहाड़ी पर 18 और खण्डगिरि में कुल 15 लेणियां हैं। इनमें से दो तल वाली रानी गुम्फा क्रमांक 1, हाथी गुम्फा क्रमांक 14, अनन्त गुम्फा क्रमांक 3, गणेश गुम्फा क्रमांक 10 और सर्पगुम्फा विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

रानी गुम्फाः

उदयगिरि–खण्डगिरि की गुफाओं में रानी गुम्फा सबसे बड़ी गुफा है। इसमें दो तल हैं। इसके नीचे वाले तल में तीन भाग और सात प्रवेश द्वार हैं। इसका बीच का भाग विशाल है। ऊपरी तल नौ स्तम्भों पर आश्रित है। इसमें सुन्दर मूर्तियों का उत्कीर्णन है जिसमें राजा का विजय जुलूस, जंगली पशु, फलों से लदे वृक्ष, मानवाकृतियां, वाद्ययंत्रों के साथ स्त्रियां, बन्दर एवं हाथियों का अंकन है[22]। स्तम्भों के ऊपरी भाग पर धार्मिक महत्व के दृष्य उत्कीर्ण हैं (चित्रः15–16)।

बाजाघर गुम्फाः

यह गुफा बहुत छोटी और सादी है। इसके स्तम्भ सादे और चौकोर हैं। इसमें भिक्षुओं के सोने के लिए पतला और लम्बा शयन चौकी तथा उसके सिराने तकिया बनाई गई है। इसमें किसी प्रकार का अलंकरण या उत्कीर्णन नहीं है।

छोटी हाथी गुम्फाः

यह गुफा भी आकार में छोटी है। इसके मुखौटे पर 6 छोटे–छोटे हाथी और पीलवान बने हैं।

अलकापुरी गुफाः

यह छोटी किन्तु दो तल वाली गुफा है जिसके स्तम्भों पर पंखधारी मानवाकृतियां और शिकार को मुख में पकड़े हुए व्याघ्र की आकृति उत्कीर्ण है।

जय विजय गुम्फाः

यह गुफा दो तलों में बनी है। इसके मुखौटे पर वृक्ष की पूजा करती स्त्रियां उत्कीर्ण हैं। स्त्रियों के कानों में भारी भरकम कुण्डल, और हाथों में बाजूबन्द हैं। उनके केश भली भांति गुथे हैं। एक स्त्री के एक हाथ में तोता और उसका दूसरा हाथ कटि प्रदेश पर आलंबित बनाया गया है, जो मनोहारी है[23]।

पनासा गुम्फाः बहुत ही साधारण और छोटे आकार की है।

ठकुरानी गुम्फाः

यह गुफा आकार में छोटी, दो तलों में बनी और सादी है किन्तु इसमें कतिपय मूर्तियां उभार के साथ उत्कीर्ण हैं।

पतालपुरी गुम्फाः

यह गुफा आकार में बड़ी है जिसके सामने बरामदा बना हुआ है।

मंचपुरी और स्वर्गपुरी गुम्फाः

यह गुफा दो तलों के साथ बनी है। मंचपुरी गुफा में मगध से लाई गई जिन की प्रतिमा की पूजा करते हुए दो स्त्री और दो पुरुषों को उत्कीर्ण किया गया है (चित्र–17)। इस गुफा से तीन अभिलेख प्राप्त हैं[24]। इनमें से एक में खारवेल की प्रधान पत्नी, दूसरे में खारवेल के उत्तराधिकारी कुडेपसिरि और तीसरे में उसके भाई या पुत्र बडुख का उल्लेख है।

चित्रः 17, मंचपुरी गुफा की मूर्तियां

गणेश गुम्फाः

इस गुफा का नामकरण इसमें बनी गणेश की प्रतिमा के आधार पर किया गया है जो संभवतः

चित्रः 18, गणेश गुम्फा

चित्रः 19, प्रवेशद्वार पर हाथी

चित्रः 20, द्वारपाल

कालान्तर में स्थापित की गई है। इसके प्रवेशद्वार पर द्वारपाल एवं मालाधारी दो हाथियों को उत्कीर्ण किया गया है[25]। गुफा के अन्तः भाग में कौशाम्बी के राजा उदयन द्वारा उज्जैन की राजकुमारी वासवदत्ता के अपहरण करने का दृष्य उत्कीर्ण है।

जम्बेश्वर गुम्फाः

एक छोटे आकार की सादी गुफा है। इसमें प्राप्त अभिलेख से विदित होता है कि यह महामदे की पत्नी नायकी की गुफा है।

व्याघ्र गुम्फाः

व्याध्र गुम्फा एक छोटे आकार की एक कक्ष की गुफा है। इसका मुख भाग व्याघ्र के मुख की भांति बनाया गया है (चित्र–21)। इस गुफा से प्राप्त अभिलेख से स्पष्ट होता है कि यह गुफा नगर के न्यायाधीश सभूति की गुफा है। वर्तमान में यह गुफा खण्डहर हो रही है।

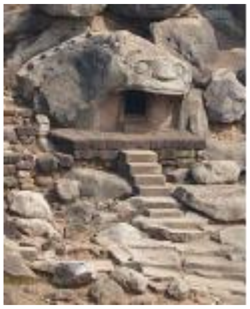

चित्रः 21, व्याघ्र गुम्फा चित्रः 22, हाथी गुम्फा चित्रः 23, अम्बिका गुम्फा

सर्प गुम्फाः आकार में छोटी है। इसमें एक अभिलेख पर सर्प लिखा हुआ मिलता है।

हाथी गुम्फाः

हाथी गुम्फा एक प्राकृतिक गुफा है[26]। इसके अन्दर हाथी का उत्कीर्णन होने के करण इसे हाथी गुम्फा कहते हैं। इस गुफा के मुख भाग पर खारवेल का विस्तृत अभिलेख उत्कीर्ण है जो उसकी उपलब्धियों पर प्रकाश डालता है (चित्र–22)।

धनघरा गुम्फाः

एक छोटी गुफा है जिसमें दो चौड़े स्तम्भ हैं। इसके प्रवेशद्वार पर द्वारपाल उत्कीर्ण हैं।

हरिदास गुम्फाः

यह एक छोटी गुफा है। इसमें तीन प्रवेश द्वार हैं। इसमें एक अभिलेख उत्कीर्ण है।

जगन्नाथ गुम्फाः

यह एक छोटी गुफा है जिसे भद्दे ढंग से काटा गया है। इसमें तीन प्रवेश द्वार हैं।

रसुई गुम्फाः

यह एक छोटी गुफा है।

खण्डगिरि की पहाड़ी में कुल 15 गुफाएं हैं जिनका सोमवंशी नरेश उद्योतकेशरी के समय में जीर्णोद्धार किया गया था।

ततोव गुम्फाः

इस गुफा के प्रवेशद्वार के मेहराबों पर तोते के उत्कीर्णन हैं तथा प्रवेशद्वार पर द्वारपाल बनाए गए हैं। गुफा की दीवारों के ऊपरी भाग पर मूर्तियां उकेरी गई हैं तथा अन्दर कलश बने हैं।

अनन्त गुम्फाः के भीतर स्त्रियों, हाथी और हंस की आकृतियां उत्कीर्ण हैं।

तेंतुली गुम्फाः एक छोटी गुफा है जो एक स्तम्भ पर आश्रित है।

खाण्डगिरि गुम्फाः एक दो तलों वाली भद्दे ढंग से काटी गई गुफा है।

ध्यान गुम्फाः भी भद्दे ढंग से काटी गई गुफा है।

नवमुनिगुम्फाः में नौ जैन तीर्थंकरों और शासन देवियों की मूर्तियां हैं जिनका उत्कीर्णन सोमवंशीय राजाओं के द्वारा 11वीं शताब्दी में कराया गया था।

बारहभुजी गुम्फाः इस गुफा की अन्दर की कोठरियों की दीवारों पर तीर्थंकरों की 25 मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। तीर्थंकर मूर्तियों के नीचे उनके शासन देवियां बनी हैं। इसमें चक्रेश्वरी को 12 भुजाओं के साथ बनाया गया है। इसीलिए इस गुफा का नाम बारहभुजी गुफा रखा गया है। इन मूर्तियों का निर्माण 11वीं शताब्दी में किया गया है।

त्रिशूल गुम्फाः में तीर्थंकर ऋषभदेव की दो मूर्तियां कायोत्सर्ग मुद्रा में उत्कीर्ण हैं। इसके अतिरिक्त चौबीस तीर्थंकरों की मूर्तियां दीवारों पर उत्कीर्ण की गई हैं।

अंबिका गुम्फाः में तीन मूर्तियां हैं जिनमें से दो भगवान ऋषभनाथ की हैं। इसके अतिरिक्त एक मूर्ति नेमिनाथ की शासनदेवी अमरा की है (चित्र–23)।

ललतेन्दु केशरी गुम्फाः में दो कक्ष हैं। प्रथम कक्ष में ऋषभनाथ की दो एवं पार्श्वनाथ की तीन मूर्तियां हैं जबकि दूसरी कोठरी में पार्श्वनाथ की दो तथा ऋषभनाथ की तथा ऋषभनाथ की एक मूर्ति स्थापित है।

एकादशी गुम्फाः यह बहुत ही साधारण ढंग की गुफा है। इन गुफाओं के अतिरिक्त तीन अन्य गुफाएं हैं गुफा क्रमांक 12, 13, और 15 जिनका नामकरण नहीं हुआ है।

गजपन्थ गुफा, महाराष्ट्रः

चित्रः 24, गजपन्थ गुफा, महाराष्ट्र चित्रः 25, समनार मलाई गुफा, जैन मूर्तियां चित्रः 26, बावा–प्यारी गुफा

महाराष्ट्र का गजपन्थ दिगम्बर संप्रदाय का एक बड़ा धार्मिक स्थल है। ऐसी मान्यता है कि इस स्थल पर सातो बलभद्रों विजय, अचल, सुधर्मा, सुप्रभ, नन्दि, नन्दिमिथ्र, और संदर्शन ने मुक्ति प्राप्त की थी। यह भी मान्यता है कि जैन साधुओं ने इसी स्थल पर अनेक यादव राजाओं को मुक्ति दिलाई थी (चित्र–24)। गजपन्थ गुफा को चामर लेणी के नाम से भी जाना जाता है। यहां एक पार्श्वनाथ की प्रतिमा स्थापित है जो यहीं से खुदाई में प्राप्त हुई थी। इससे थोड़ी दूर अंजनेरी में दो अन्य जैन गुफाएं हैं।

समनार मलाई गुफाः

समनार मलाई की गुफाएं मदुरई से 12 किलोमीटर की दूरी पर कीलकुइलकुडी नामक गांव में स्थित हैं। तमिल भाषा में मलाई का अर्थ पहाड़ी होता है। इस पहाड़ी पर प्रथम शताब्दी ई0 की जैन गुफाएं हैं। प्राचीन काल से ये गुफाएं जैन भिक्षुओं की तपस्थली रही हैं। इससे जिनों की मूर्तियां और अभिलेख प्राप्त हैं। अभिलेखों के अनुसार इस स्थान पर अनेक जैन भिक्षुओं ने संलेखना की थी। इसके प्रवेशद्वार पर कतिपय जैन धार्मिक प्रतीक तथा गोमतेश्वर, महावीर, यक्ष एवं यक्षिणियों की मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। यहां की सेत्तिपेडवू और पेचिपल्लम की मूर्तियां विशेष आकर्षण का केन्द्र है। सेत्तिपेडवू में महावीर और पेचिपल्लम में बाहुबली तथा महावीर की मूर्तियों सहित आठ मूर्तियां हैं। इन्हें नवीं शताब्दी का माना जाता है (चित्र–25)।

उदयगिरि गुफा (विदिशा, मध्य प्रदेश):

मध्य प्रदेश में विदिशा के पास उदयगिरि की पहाड़ियों में तीसरी से पांचवीं शताब्दी के बीच निर्मित अनेक गुफाएं हैं जो ब्राह्मण, जैन और बौद्ध धर्मों से संबन्धित हैं। यहां की गुफा क्रमांक 20 जो पहाड़ी के उत्तरी–पश्चिमी किनारे पर स्थित है, जैन सम्प्रदाय से संबन्धित है[27]। यह 15 मीटर लम्बी और 4.9 मीटर गहरी है[28]। इसके प्रवेशद्वार पर सर्प छत्रावली के नीचे बैठे पार्श्वनाथ की प्रतिमा है। इस गुफा में कुल 5 वर्गाकार कक्ष हैं। इससे एक आठ पंक्तियों का अभिलेख प्राप्त है जिसमें गुप्त राजवंश के काल में सभी के अभ्युदय की कामना की गई है तथा इस गुफा में संगकर द्वारा पार्श्वनाथ की मूर्ति प्रतिष्ठापित करने और कालान्तर में उनके भिक्षु बन जाने का उल्लेख है। इस गुफा से एक अन्य जिन तथा गणेश की मूर्ति भी प्राप्त है[29]।

बावा–प्यारा गुफा, जूनागढ़ः

जूनागढ़ की बावा–प्यारा गुफा एक शैलकृत गुफा है। प्रथम शताब्दी ई0 से यहां जैन भिक्षु निवास करते रहे हैं। यह उत्तर पश्चिम भारत की प्राचीनतम गुफाओं में से एक है (चित्र–26)। ये गुफाएं तीन पंक्तियों में बनी हैं। जेम्स बर्गेस के अनुसार ये गुफाएं मूलतः बौद्ध भिक्षुओं की थीं कालान्तर में इनमें जैन भिक्षु निवास करने लगे। इस गुफा से प्राप्त एक खण्डित अभिलेख ''केवलज्ञान संप्राप्तानां जीतजरामरणानां'' से इसकी पुष्टि भी होती है। डॉ0 एच0 डी0 सांकलिया[30] ने गुफा के दरवाजे के बाजुओं पर उत्कीर्ण मांगलिक प्रतीकों नन्द्यावर्त, स्वस्तिक, दर्पण, भद्रासन, मीन युगल, और पूर्ण घट के आधार पर इन गुफाओं को जैन धर्म से संबद्ध करते हुए यहां के चैत्य गृह की तिथि द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व और मांगलिक प्रतीकों वाली गुफाओं को द्वितीय–तृतीय शताब्दी ई0 माना है। इसका समर्थन मधुसूदन ढाकी[31] भी करते हैं।

मांगी–तुंगी गुफा, महाराष्ट्रः

महाराष्ट्र में नासिक से 125 किलोमीटर की दूरी पर तहराबाद के पास मांगी और तुंगी की पहाड़ियों पर दिगम्बर जैन संप्रदाय का एक तीर्थ है। इसे सिद्ध क्षेत्र के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। यहां तीर्थकरों की अनेक मूर्तियां हैं जिनमें 2016 में निर्मित ऋषभदेव की 108 फीट ऊंची प्रतिमा अत्यन्त भव्य है (चित्र–27)। यहां की गुफाओं को इन्हीं तीर्थंकरों के नाम से नामित किया गया है। जैन भक्तों की धारणा है कि यहीं पर राम, हनुमान, सुग्रीव, संदील, गव्य, नील, महानील, तथा अन्य 99 करोड़ भिक्षुओं को मोक्ष की प्राप्ति हुई थी। तुंगी पहाड़ी पर दो गुफाएं हैं जिनमें से एक चन्द्रप्रभु गुफा में चन्द्रप्रभु की मूर्ति है। मांगी पहाड़ी पर 10 गुफाएं हैं जिनमें से सात प्राचीन गुफाएं हैं।

चित्रः 27, ऋषभनाथ मूर्ति

चित्रः 28, तीर्थंकर मूर्तियां

चित्रः 29, इन्द्र सभा का प्राचीन चित्र

महावीर दिगम्बर जैन गुफा मंदिर में मूल नायक महावीर स्वामी पद्मासन मुद्रा में विराजमान हैं। उनके बांए पार्श्व में अन्य 4 तीर्थंकरों की मूर्तियां हैं। गुफा क्रमांक 6 में आदिनाथ की पद्मासन अवस्था में 4.6 फीट ऊंची मूर्ति है। गुफा की दीवार पर पद्मासन मुद्रा में 20 जैन तीर्थकरों की मूर्तियां बनी है जिसके बीच में पार्श्वनाथ की मूर्ति है। गुफा की दूसरी दीवार पर 28 पद्मासन अवस्था की जैन मूर्तियां बनी हैं। गुफा क्रमांक 7 में चारो दिशाओं में मुख कर स्थित चार और दीवारों पर अन्य चार तीर्थंकर मूर्तियां हैं (चित्र–28)। गुफा क्रमांक 8 में 20 तीर्थंकर एवं सात साधुओं की मूर्तियां हैं। गुफा क्रमांक 9 में बीच में पार्श्वनाथ तथा दीवारों पर 47 तीर्थंकरों एवं 13 जैन साधुओं की मूर्तियां बनी हैं। तुंगी पहाड़ी पर 4 प्राचीन गुफाएं हैं जिन्हें चन्द्रप्रभ गुफा, पार्श्वनाथ गुफा, आदिनाथ गुफा, पार्श्वनाथ गुफा–2 नाम से जाना जाता है। इसके अतिरिक्त यहां सहस्रकूट लोटस टेम्पुल एवं भव्य उद्यान भी है।

एलोरा (औरंगाबाद) ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन तीनों धर्मों का केन्द्र रहा है। यहां चरणाद्रि पर्वत पर बनी 5 गुफाएं क्रमांक 30–34 दिगम्बर जैन धर्म से संबंधित हैं जिनका निर्माण आठवी से तेरहवीं शताब्दी के बीच राष्ट्रकूट एवं यादव वंश के राजाओं के संरक्षकत्व में हुआ था। इनके अतिरिक्त इन गुफाओं के पीछे 6 अन्य टूटी गुफाएं हैं जिनका संबन्ध जैन संप्रदाय से था।

गुफा क्रमांक 30 छोटी कैलाश गुफा के नाम से जानी जाती है जो यहीं की हिन्दू गुफा क्रमांक 16 कैलाश के अनुकरण पर एकाश्म पत्थर को काट कर द्राविड़ शैली में बनाई गई है किन्तु उसका आकार अपेक्षाकृत छोटा है। इसमें अष्टप्रतिहार्यों के साथ जिन मूर्तियों को बहुत सुन्दर ढंग से बनाया गया है। इस गुफा में नक्काशीदार एक चौकोर प्रवेश द्वार, आंगन, केन्द्रीय बड़ा कक्ष और गर्भगृह है जिसके बांए एवं दांए दो छोटे कक्ष हैं।

गुफा क्रमांक 31 और 32 आस–पास हैं और लगभग एक दूसरे से जुड़े हैं। गुफा क्रमांक 31 में एक वर्गाकार हाल, चार स्तम्भ एवं महावीर की प्रतिमा से युक्त गर्भगृह है। इसकी दीवारों पर जिन मूर्तियां हैं जिनमें यक्ष मातंग और यक्षी सिद्धायिका के साथ महावीर, यक्ष धरणेन्द्र के साथ सर्पफण युक्त पार्श्वनाथ, बाहुबली, आदि मुख्य हैं[32]।

गुफा क्रमांक 32 इन्द्र सभा के नाम से नामित है (चित्र–29–30)। दो तलों में बनी इस गुफा में 13 कक्ष हैं जो विभिन्न तीर्थंकर मूर्तियों महावीर, पार्श्वनाथ, बाहुबली, आम्र वृक्ष के नीचे सिंहासन पर बैठी यक्षी अम्बिका, चक्रेश्वरी, नृत्य मुद्रा में इन्द्र की दो मूर्तियां एवं अलंकृत अभिप्रायों से सुशोभित है (चित्र–31–34)। इसमें जिन समवसरण का प्रदर्शन किया गया है। इसकी छतों पर सुन्दर चित्र बनाए गए हैं। इन्द्र सभा के निचले तल पर मुख्य कक्ष से संलग्न एक बरामदा है जिसमें शान्तिनाथ, सहित अन्य जिनों की नग्न मूर्तियां हैं। कुछ के नीचे मूर्ति निर्माताओं के नाम भी अंकित हैं। इस गुफा के पीछे गुफा क्रमांक 32 बी है जो अपूर्ण है। इसमें एक आंगन और एक सभा कक्ष है। इसकी मूर्तियां समय के साथ अपनी आभा खो चुकी हैं।

चित्र:30, शिखर, इन्द्र सभा चित्र:31, पार्श्वनाथ चित्र:32, बाहुबली चित्र:33, अम्बिका चित्र:34,छत पर चित्र,इन्द्र सभा

गुफा क्रमांक 33 जगन्नाथ सभा के नाम से जानी जाती है जो यहां की दूसरी बड़ी गुफा है। इसका निर्माण नवीं शताब्दी में हुआ था। यह दो तलों वाली गुफा है जिसमें 12 बड़े आकार के स्तम्भ, मंडप की तरफ निकले हुए हाथी मूर्ति के शिर, तथा पार्श्वनाथ और महावीर की विशाल मूर्तियां हैं।

गुफा क्रमांक 34 में एक आंगन, एक बरामदा, एक कक्ष एवं गर्भगृह है। इसमें सिंह पर बैठी अम्बिका, चामर धारियों से युक्त बैठी मुद्रा में पार्श्वनाथ, एवं अन्य मूर्तियां है।

इस प्रकार धार्मिक उद्येश्य से मानव निर्मित गुफाओं के निर्माण का क्रम सम्राट अशोक द्वारा बिहार की बराबर और नागार्जुन पहाड़ियों पर बनवाई गई गुफाओं से प्रारम्भ होता है जो अनवरत आगे बढ़ता रहा। इन्हीं बौद्ध गुफाओं के अनुकरण पर जैन साधुओं के आवासन हेतु गुफाएं बनाई गईं जिनमें कालान्तर में जिन मूर्तियां, जैन धार्मिक प्रतीक और यक्ष यक्षिणियों की मूर्तियां उत्कीर्ण की गई। इनके सजावट के लिए फूल पत्तियों एवं चित्रों का भी आलंबन लिया गया। जो प्राचीन गुफाएं आकार में

छोटी थीं अनका विस्तार कर उनमें जिन मूर्तियां स्थापित की गईं। इस प्रकार जैन धर्म में इन गुफाओं का एक अध्याय संलग्न हुआ जो जैन संन्यासियों के आवास के साथ जैन धार्मिक परम्पराओं, धार्मिक मूल्यों के संरक्षण और विस्तार में सहायक बनीं। अन्य धार्मिक मतावलम्बियों के लिए ये गुफाएं आज भी महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल के रूप में अपनी उपादेयता प्रमाणित कर रही हैं।

संदर्भ:

1. Jain Jyoti Prasad, Religion and Culture of Jains, Bhartiya Gyanpith,1977, पृ0 104–114
2. Shah Dr, Umakant Premanand, Jain-rupa-mandan (Jaina Iconography), Abhinav Publications, 1987, P. 9
3. यू0 पी0 शाह, उपरोक्त, 1987, पृ0 33–40
4. Tiwari Marutinandan Prasad, Life of the Jinas as Depicted in the Kumbharia Jain Temple, Prachi Prabha, Essays in the Honour of Professor B.N.Mukherjee, New Delhi, 1989, P. 15-21
5. विस्तार के लिए द्रष्टव्यः तिवारी मारुतिनन्दन प्रसाद, जैन प्रतिमाविज्ञान, पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, 1977, पृ0 29–44.
6. तिवारी देवी प्रसाद, जैन कला के विविध आयाम, भोगीलाल लहरचन्द इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डोलोजी व्याख्यान, दिल्ली, 2026, पृ0 1–2.
7. Fergusson James and James Burgess, The cave temples of India, W.H. Allen and Co. London, 1880, P 27, 38.
8. Mishra Shyam Manohar, Yashovarman of Kannauj: A study of Political History, Social, and Cultural life of northern India during the reign of Yashovarman, Abhinav Publications, New Delhi, 1977.
9. Fergusson James and James Burgess, 1880, P. 509.
10. Cunningham A., Gwalior Fort: Rock Sculptures, Archaeological Survey of India, pages 364-370; Gwalior Fort, Archaeological Survey of India, Bhopal Circle, India (2014)
11. Michell, George Temple Architecture and Art of the Early Chalukyas: Badami, Mahakuta, Aihole, Pattadakal, 2014, Niyogi Books, ISBN 978-93-83098-33-0, P. 37; Gopal Madan, K.S. Gautam (ed.), India through the ages, 1990, Publication Division, Ministry of Information and Broadcasting, Government of India, P. 174; Prasanna Kumar Acharya, An encyclopaedia of Hindu architecture, 2010, Oxford University Press (Republished by Motilal Banarsidass), ISBN 978-81-7536-534-6.
12. Fergusson James, 1880, P 504-505.

13. Fergusson James, The cave temples of India, W.H. Allen & Co P.267ff ; Epigraphia Indica P.90ff

14. Sewell Robert, (1882), Lists of the Antiquarian Remains in the Presidency of Madras, Government Press, P. 296; W Francis (1905), Madura, Volume 1, Madras District Gazetteers, P. 327

15. सिन्हा बी0 पी0, डाइरेक्ट्री आफ बिहार आर्कियोलाजी, बिहार पुरातत्व परिषद, पटना, 2000, पृ0 147; एस0 के0 झा, राजगृह द सिटी ऑफ एमिनेंस, काशी प्रसाद जयसवाल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पटना, 2011, पृ0 88; जलज कुमार तिवारी, ए नोट आन जैन स्कल्पचर्स ऐट वैभारगिरि, राजगिरि, आइकान, जर्नल आफ आर्कियोलाजी एण्ड कल्चर, वाल्यूम 9, 2024, पृ0 237.41.

16. Ramaswamy Vijaya, Historical Dictionaries of Peoples and Cultures (2 ed.) 2017, Rowman & Littlefield. ISBN 9781538106860, P. 52

17. Rock-cut Jaina temple, Sittannavasal, Archaeological Survey of India, 2012.

18. Fergusson James; Burgess, James (6 May 2013). The cave temples of India. Cambridge: Cambridge University Press. pp. 186, 200–203. ISBN 978-1-108-05552-9.

19. Sankalia H. D. (1938). The Earliest Jain Sculptures in Kāthiāwār, Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland, 70 (3): 426–430. doi:10.1017/S0035869X00077844. JSTOR 25201741. S2CID 162887748.

20. Shah Umakant Premanand (1995). Studies in Jain Art and Iconography and Allied Subjects in Honour of Dr. U. P. Shah. Abhinav Publications. P 30.

21. Michell George, The Penguin Guide to the Monuments of India,: Buddhist, Jain, Hindu, Volume 1, 1990, Penguin Books, P 238-240.

22. Gupta Sunil, Early Sculptural Art in the Indian Coastlands: A Study in Cultural Transmission and Syncretism (300 BCE-CE 500), 2008, D. K. Print World, P 85.

23. Alī Jāvīd and Tabassum Javeed, World Heritage Monuments and Related Edifices in India, vol. 1, 2008, Algora Publishing, New York, P 36-37.

24. Singh Upinder, Political Violence in Ancient India, 2017, Harvard University Press, P 157.

25. Reference Udaigiri

26. Allen, Margaret Prosser (1991), Ornament in Indian Architecture, University of Delaware Press, P. 65.

27. Javid, Ibid, P 37.

28. Cunningham Alexander (1880), Report of Tours Bundelkhand and Malwa 1874-1875 and 1876-1877, Archaeological Survey of India, Vol. 10.
29. Do, page, 53-54
30. Dass Meera, Udayagiri: A Sacred Hill, Art, Architecture and Landscape, 2001, De Monfort University.
31. Sankalia Hasmukh Dhirajlal, The Archaeology of Gujarat: Including Kathiawar, 1941, Natwarlal & Company. pp. 47–49.
32. Journal of the Oriental Institute, Volume 49, page no. 83.
33. Ali Javid and Tabassum Javeed, World Heritage Monuments and Related Edifices in India, Vol 2, 2008, Algora Publishing, New York, P 164.

डॉ0 डी0 पी0 तिवारी, ईमेलः tewaridplu@gmail.com
डॉ0 अनुष्का ओझा